नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

## पौष्टिक भोजन की उपलब्धता पर भी ध्यान जरूरी

2027 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के सपने संजो रहा है. सरकार अगले 5 वर्षों तक 80 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त अनाज भी देने वाली है लेकिन यहां समस्या केवल भूख नहीं बल्कि पौष्टिक भोजन की भी है. संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने अपने खाद्य सुरक्षा और पोषण के क्षेत्रीय अवलोकन 2024 में हैरान कर देने वाले आंकड़े उजागर किये हैं. इन आंकड़ों के अनुसार भारत में 74 फ़ीसदी लोग पौष्टिक भोजन नहीं कर रहे हैं. जाहिर है इससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है. रिपोर्ट बताती है कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र में कुपोषण के लिहाज से 37.07 करोड़ गरीब लोग मौजूद हैं जो वैश्विक स्तर पर कुपोषित जनसंख्या के आधे से ज्यादा है. भारत के अलावा पाकिस्तान में 82.8 प्रतिशत और बांग्लादेश में 66.1 फीसदी आबादी कुपोषित है. जबकि नेपाल में 76.4 फीसदी, श्रीलंका में 55.5 फीसदी और भूटान में 45.2 प्रतिशत जनसंख्या कुपोषण से ग्रस्त है. इस तरह से दक्षिण एशियाई क्षेत्र वैश्विक अल्पपोषित मानचित्र पर सबसे ज्यादा दिखाई देते हैं. यह रिपोर्ट बताती है कि देश की 53 प्रतिशत महिलाओं में रक्ताल्पता की समस्या है, और पांच साल से कम आयु के 31.7 फीसदी बच्चों की हाइट उम्र के लिहाज से कम है, इसके साथ ही 18.7 प्रतिशत बच्चों का वजन तकनीकी तौर पर उनकी ऊंचाई के अनुरूप कम है.

रोचक बात यह है कि यही अनुमान पूर्व में वैश्विक भूख सूचकांक (जीएचआई) में चिन्हित किये गये थे जिन्हें भारत ने यह कहकर नकार दिया था कि इनके लिए अपनाई गयी कार्यप्रणाली सही नहीं है, जबकि एफएओ का कहना है कि जब तक बढ़ रही आय का स्तर बढ़ रही खाद्य कीमतों के बराबर नहीं होता है, अस्वास्थ्यकर भोजन की प्रवृत्ति घटेगी नहीं. जहां तक आय स्तर का संबंध है तो भारत की अधिकांश जनसंख्या लगातार उस स्तर पर है जो सब-सहारा अफ्रीका में मौजूद है. एक लेख 'फोकस ऑन द बेस ऑफ ए पिरामिड' में ये अनुमान था कि 90 करोड़ भारतीय उतनी ही आय में निर्वाह कर रहे थे जितनी आमदनी सब सहारा अफ्रीका में है. इतने निम्न आय स्तर के साथ, जो अर्थव्यवस्था की वृद्धि के बावजूद जारी है, तो अस्वास्थ्यकर खुराक कायम रहेगी. इसे प्रमाणित करने के लिए, विश्व बैंक की ताज़ा गणना से मालूम हुआ कि ब्रिक्स देशों में, भारत की 91 प्रतिशत आबादी 280 रुपये रोजाना (4 डॉलर प्रतिदिन) से कम में जीवन यापन करती थी. यह वृद्धि अर्थव्यवस्थाओं में सबसे कम है, इतने ही आय स्तर पर 51 प्रतिशत आबादी के साथ दक्षिण अफ्रीका दूसरे स्थान पर आता था. स्वास्थ्यकर खुराक प्राप्त करने को लेकर, जवाब यही है कि पिरामिड की सतह पर प्रचलित आय स्तर को बढ़ाया जाये.यह मुश्किल लगता है, और कुछ तो इसे असंभव ही कहेंगे, पर हकीकत में औसत आय स्तर को बढ़ाना कठिन नहीं है. चूंकि ग्रामीण परिवारों का करीब 70 फीसदी हिस्सा कृषि पर आश्रित है तो खेती को व्यवहार्य और लाभकारी उद्यम बनाने में ही इसका जवाब निहित है. कृषि क्षेत्र में कार्यरत जिस 47 फीसदी कार्यबल को व्यवहार्य आय स्तर से लगातार वंचित रखा जा रहा है, वे कभी पोषण से भरपूर आहार नहीं प्राप्त कर सकते हैं. कई अध्ययनों ने इंगित किया कि ग्रामीण मजदूरी जो किसी भी रूप में निम्नतम है, फिर से कम हुई या स्थिर रही. और जब गरीब परिवारों में आय कम होती है तो वे अपने द्वारा लिये जाने वाले भोजन में ही कटौती करते हैं. महंगाई नियंत्रण के उद्देश्य से कृषि क्षेत्र को जानबूझकर दरिद्र बनाये रखने के चलते मैक्रो इकनॉमिक नीतियों ने कृषि को व्यवहार्य विकल्प बनाने के प्रयासों को दबा दिया है. राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर एक त्रुटिपूर्ण ग्रंथ की याद दिलाता है जिसे नीति आयोग ने साल 2020 में देशभर में एक आम आदमी द्वारा भुगतान की जाने वाले भोजन थाली की लागत को मापने के मकसद से तैयार किया था.

रिपोर्ट के मुताबिक, प्याज-टमाटर के दाम कम होने से औसतन एक शाकाहारी थाली की लागत 27.9 रुपये थी. यह लागत उससे 17 फीसदी कम थी जो एक माह पहले एक आम शहरी को घर पर भोजन तैयार करने में पड़ती थी. बहरहाल,यह ध्यान में रखते हुए कि भारत में 74 फीसदी लोग स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन का खर्च उठाने में समर्थ नहीं हैं तो क्रेडिट रेटिंग एजेंसी से व्याख्या करने के लिए जरूर कहना चाहिये कि यदि कुपोषित जनसंख्या का बढ़ना जारी है तो उसके द्वारा लागत को प्रदर्शित करने के प्रयास कितने प्रासंगिक हैं. दरअसल,किसी देश के लिए विकास का अंतिम मापक एक सेहतमंद राष्ट्र होना चाहिये. इस दृष्टि से सभी को पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो इस और भी सरकार का ध्यान जाना चाहिए.

महाकौशल की डायरी

## फिल्म स्टारों की गैर मौजूदगी से नहीं लग सका ग्लैमर का तड़का

अविनाश दीक्षित

**लोकसभा** चुनाव के पहले चरण में जबलपुर सहित महाकौशल के छिंदवाड़ा, बालाघाट, मंडला और विंध्य के शहडोल संसदीय क्षेत्र में प्रचार थम चुका है. आज इन सीटों पर मतदान हो रहा है. मोदी मैजिक, राम मंदिर निर्माण की छाया तले भाजपाई जहां चुनावी जीत के प्रति पूर्णत: आश्वस्त हैं वहीं सीमित संसाधनों और कार्यकर्ताओं के अभाव के साथ कांग्रेस प्रत्याशियों ने भी अपनी ताकत झोंक दी है. परिणाम किसके पक्ष में आएंगे, इसका पता तो 4 जून को ही चल पाएगा.

संसदीय चुनाव के इतिहास में संभवत यह पहला मौका रहा कि स्टार प्रचारकों की ताबड़तोड़ रैलियां नहीं हुई, कोई फिल्म स्टार महाकौशल में प्रचार करने नहीं आया. अलबत्ता भाजपा के स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, सी एम मोहन यादव, अमित शाह सहित कुछ अन्य नेताओं ने प्रचार किया लेकिन कांग्रेस की ओर से प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ही आए. सियासी स्टार प्रचारकों की सभाओं के अलावा फिल्म स्टारों की सहभागिता ना होने से लोकसभा चुनाव में ग्लैमर का तड़का नहीं लग पाया.

### सक्रियता बनाम निष्क्रियता में जंग

शहडोल सीट के राजेंद्रग्राम को छोड़कर संसदीय क्षेत्र के उमरिया, अनूपपुर, शहडोल और कटनी के बड़वारा में साधन विहीन कांग्रेस के झंडे बैनर तक नहीं ही दिखे परंतु साधन संपन्न भाजपा के भी झंडा बैनर न होने से सियासी हलकों में अनेक चर्चाएं हैं वहीं चुनावी माहौल

भी फीका फीका सा रहा. स्मरण रहे कि दोनों ही प्रत्याशी राजेंद्र ग्राम के निवासी हैं. चर्चा है कि कांग्रेस प्रत्याशी जो चुनाव ही लड़ना नहीं चाहते थे और अपनी विधायकी से ही सही खुश थे उन्हें पार्टी ने प्रत्याशी बना दिया. पार्टी का आदेश मानकर वह चुनावी कामकाज में जुट गए किंतु बेमन से. जिसके चलते वह संसदीय क्षेत्र के बड़े हिस्से में पहुंच ही नहीं पाए. दूसरी ओर भाजपा प्रत्याशी हिमाद्री सिंह टिकट मिलने के बाद इतनी निश्चिंत हो गईं कि उन्होंने ज्यादातर समय घर पर ही गुजार दिया. यह बात अलग है कि बंद कमरे में रणनीतियां बनती रहीं और उनसे मिलने दूरदराज से आए पार्टी पदाधिकारी घंटों इंतजार कर वापस लौटते रहे. चर्चा है कि संसदीय क्षेत्र के भाजपाइयों का एक बड़ा वर्ग मौजूदा प्रत्याशी से खफा है लेकिन अनुशासन का डंडा उनके मुंह में लगाम लगाए है. नाम न छापने की शर्त पर कुछ पदाधिकारियों ने प्रत्याशी की निष्क्रियता को बड़ी कमजोरी माना है.

दूसरी ओर कांग्रेस प्रत्याशी, तीन बार के विधायक फुंदेलाल मार्को भाजपा प्रत्याशी की इस निष्क्रियता को सियासी हथियार बनाकर मतदाताओं के बीच जा रहे थे और उनको अच्छा सपोर्ट मिलने की भी चर्चाएं हैं. सीमित संसाधनों के चलते वह अपने सियासी हथियार को वह कितनी धार दे पाए हैं, इसका फैसला जून के प्रथम सप्ताह में ही चल पाएगा.

### 5 साल में नहीं दिखा ऐसा अपनत्व...

चुनाव चाहे कोई भी हो सियासी मैदान में उतरते ही प्रत्याशियों के हाव-भाव, व्यवहार गिरगिट की तरह रंग बदल लेते हैं. कल तक जिन रिश्तेदारों, दोस्तों से दूरियां बनाए रखने की कवायद की जाती रही, उन्हीं से अब ऐसे मिला जा रहा है कि जैसे जन्मों से बिछड़े रहे हैं. लोकसभा चुनाव में ऐसे नजारे अनेक स्थानों में देखने मिले. प्रत्याशियों और उनकी टीम के लोग अपने-अपने रिश्तेदारों की मोबाइल नंबर के साथ लिस्ट बनाकर और संपर्क कर उनकी कुशलक्षेम पूछते ही रहे बल्कि मोहल्लों, कॉलोनी, गांव में जान पहचान वाले चेहरों को भी भेजते रहे. बूथ और पन्ना प्रमुख इन क्षेत्रों के लोगों से सीधे मिलते रहे और मिलने का उनका अंदाज भी निराला देखा गया. मतदाताओं के दिल में जगह बनाने के लिए वह अपने से बड़ों के पैर छूकर और यदि कोई छोटा है तो उसे गले लगाकर तथा बराबरी वालों से गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए देखे जाते रहे. घर में कोई महिला हो या पुरुष उनसे ऐसी भाव भंगिमा के साथ ठंडा पानी या चाय मांगते देखा जाता रहा जैसे वह उस परिवार का सबसे करीबी हो, यह अलग बात है कि उनके जाते ही लोग यह कहने से नहीं चूकते थे की ऐसा अपनत्व तो बीते 5 सालों में नहीं दिखा ....

## छत्तीसगढ़ में वोटिंग से पहले | नक्सलियों से मुठभेड़ में बड़ी सफलता

**लोकसभा चुनाव के लिए छत्तीसगढ़ में 19 अप्रैल, 26 अप्रैल और 7 मई को वोट पड़ने हैं. 44 दिनों तक चलने वाली इस लंबी मतदान प्रक्रिया का एक कारण छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे प्रदेशों में मौजूद माओवादी हिंसा भी है. नक्सली हिंसा से प्रभावित छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में इसलिए तीन चरणों में मतदान हो रहा है, जहां पहले से ही सुरक्षाबलों को आशंका थी कि चुनाव के पहले और उसके दौरान नक्सली हिंसा के जरिये इस प्रक्रिया में खलल डालने की कोशिश करेंगे.**

सुरक्षाबलों को अपने खुफिया तंत्र से पता चला कि नक्सली 19 अप्रैल को छत्तीसगढ़ की पहली लोकसभा सीट बस्तर में होने जा रहे मतदान के पहले किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए कांकेर जिले के थाना छोटेबेठिया के अंतर्गत आने वाले विनागुंडा और कोरोनोर के मध्य होपाटोला के जंगलों में मीटिंग कर रहे हैं. आनन-फानन में बस्तर के आईजी सुंदरराजन और बीएसफ के डीआईजी आलोक कुमार सिंह ने एक्शन की योजना बनाई और उस इलाके को चारों तरफ से घेर लिया, जहां नक्सली चुनाव में बाधा पहुंचाने की योजना बना रहे थे. इस योजना बैठक में 25 लाख रुपये के इनाम वाले नक्सली रावघाट कमेटी प्रभारी शंकर राव तथा उत्तर

बस्तर डिवीजन प्रभारी ललिता मड़ावी भी मौजूद थी. साथ ही प्रतापपुर एरिया कमेटी कमांडर राजीव सलाम भी इस बैठक में शामिल था. जैसे ही सुरक्षा बलों ने नक्सलियों को चारों तरफ से घेर लिया, तुरंत फायरिंग शुरू हो गई, जो शाम तक चलती रही और अब तक की इस सबसे बड़ी कार्रवाई में 29 चरमपंथी ढेर कर दिए गए.

### सबसे बड़ी कार्रवाई

यह अभियान जीएसएफ और डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड ने मिलकर संयुक्त रूप से चलाया था. हालांकि यहा अब तक की सबसे बड़ी नक्सलियों के विरुद्ध कार्रवाई है, लेकिन खुफिया सूत्रों को आशंका है कि अंतिम चरण के चुनावों के पहले तक संभव है कि नक्सली इस कार्रवाई का बदला लेने के लिए कोशिश करें. एक सूचना के मुताबिक जंगल में हिंसक कार्रवाई की योजना बना रहे सभी नक्सली मारे गए हैं. तो दुसरी सूचना के मुताबिक बैठक में हिस्सा ले रहे नक्सलियों की संख्या मारे गए नक्सलियों से कहीं ज्यादा थी और बड़े पैमाने पर वो लोग पहाड़ी क्षेत्र में एक छोटे बरसाती नाले का सहारा लेकर महाराष्ट्र की सीमा की ओर भाग गए हैं. इन भागने वालों की संख्या करीब दो ढाई सौ के आसपास थी. लोकसभा चुनावों की शुरुआत के पहले सुरक्षाबलों को मिली यह बड़ी कामयाबी है.

### कमाई का जरिया बना

साढ़े पांच दशकों से चला आ रहा नक्सलाइट मूवमेंट, कई शातिर लोगों की कमाई का जरिया भी बन गया है, नक्सली प्रोटेक्शन मनी वसूल करते हैं दशकों से गरीबों और आदिवासियों की आबादी और सुरक्षा के नाम पर हिंसा की जा रही है. 1967 में बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से शुरू हुए इस हिंसक नक्सली आंदोलन के चलते अब तक 2 लाख से ज्यादा आम लोग और सुरक्षाकर्मी मारे जा चुके हैं. इस दौरान 50 हजार से ज्यादा नक्सली भी मारे गए हैं.नक्सली आंदोलन को जड़ से कुचलने या सफाया करने की विभिन्न सरकारें कोशिशें करती रहीं, लेकिन इसके विरुद्ध कोई निर्णायक सफलता नहीं मिली, नक्सली संविधान व कानून को नहीं मानते और दहशत व अराजकता फैलाने में लगे रहते हैं,

## घोषणापत्रों पर भरोसा करें या नहीं

**हर** पार्टी अपना चुनावी घोषणापत्र जारी करती है ताकि मतदाता उसे पढ़ें और उसमें किए गए वादों पर विश्वास कर उसे वोट दें. जो निष्ठावान या कमिटेड वोटर रहता है, उसे घोषणापत्र पढ़ने की जरूरत ही नहीं रहती. वह हमेशा अपनी पसंद की पार्टी को वोट देता है. इसमें कोई तर्क-वितर्क नहीं करता. पार्टी भी अपने परंपरागत वोटरों को पहचानती है. घोषणापत्र उन मतदाताओं के लिए रहता है जिनकी च्वाइस तय नहीं होती और मन चल-विचल रहता है. ऐसे वोटर को गारंटी देकर पटाया जाता है. ऐसे मतदाता देखते हैं कि किसकी गारंटी फायदेवाली या आकर्षक है. हर लुभावना वादा पूरा नहीं होता लेकिन फिर भी उम्मीद तो जगाता है. इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ के नारे पर चुनाव जीता था

लेकिन जनता वैसी ही गरीब रही, नेता अमीर होते चले गए! बीजेपी ने 2014 के चुनाव में किसानों को उत्पादन लागत के आधार पर फसल का गारंटी भाव देने का वादा किया था जो पूरा नहीं हुआ. घोषणापत्र में वादों की भरमार रहती है. सत्ता पक्ष अपने वादों को जनकल्याणकारी संकल्प पत्र और विपक्षी पार्टियों के वादों को 'रेवड़ी' बताता है. शिवसेना ने अपने घोषणापत्र को वचननामा% नाम दिया है. लोकतंत्र में उम्मीद की जाती है कि मतदाताओं को विभिन्न पार्टियों के घोषणापत्र पढ़ना चाहिए लेकिन पढ़े-लिखे लोग भी या तो इन्हें पढ़ते नहीं या सरसरी नजर डालकर छोड़ देते हैं क्योंकि इनकी गारंटी किसी स्टैंप पेपर पर तो होती नहीं! सुप्रीम कोर्ट ने भी मुफ्त में बहुत कुछ देनेवाले खोखले आश्वासनों पर सवाल उठाया था. अब तो वादे या आश्वासन सिर्फ 5 वर्ष तक के लिए सीमित नहीं रहते, बल्कि आज से 23 वर्ष बाद अर्थात 2047 तक के लिए वादे किए जाने लगे हैं क्योंकि वह देश की आजादी का शताब्दी वर्ष होगा. फाइबर ग्लास की शीट से झोपड़ा बस्तियां ढक देनेवाले देश को कुछ ही वर्षों में तीसरे नंबर की वर्ल्ड इकोनॉमी बनाने का वादा करते हैं. साथ ही करोड़ों गरीबों को 5 वर्ष तक मुफ्त राशन देने का भी समानांतर वादा किया जाता है. किसी को इसमें विरोधाभास नहीं देखना चाहिए.

निशानेबाज

## तालमेल हो रहे कैसे-कैसे, मन की बात और मनसे

**प**ड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, मन की बात प्रधानमंत्री मोदी करते हैं जबकि मनसे राज ठाकरे की पार्टी है. मन की बात कहना भी एक आर्ट है. कुछ लोग मन ही मन घुलते रहते हैं और अपने मन की बात किसी से कह नहीं पाते. फिल्मी हीरोइन गाती थी मेरी बात रही मेरे मन में, कुछ कह न सकी उलझन में! पुराना हीरो अपने मन की बात बताने के लिए हीरोइन से परमिशन मांगते हुए गाता था- मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं बता दूं ! मोदी अपने मन की बात कहने के लिए किसी की अनुमति नहीं मांगते. जैसे ही कुछ बोलने की अनुभूति हुई, कुछ सत्य तो कुछ कल्पनाओं का कॉकटेल बनाकर बोल डालते हैं. शास्त्रों में कहा गया है- वचनेषु किं दरिद्रता अर्थात बोलने में कंजूसी कैसी !

हमने कहा, इसमें कोई शक नहीं कि मोदी एक कुशल कम्युनिकेटर या संवाद प्रेषक हैं जो बड़ी सहजता से देशवासियों को मन की बात कह जाते हैं. जैसे सूतजी नैमिषारण्य में 88 हजार ऋषि-मुनियों को सत्यनारायण

की कथा सुनाते थे, वैसे ही मोदी भी 140 करोड़ भारतीयों को मन की बात सुना देते हैं!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, मन की बात कहने से पहले उसे मन में उपजाना पड़ता है. गीता में कहा गया है कि मन की गति अत्यंत चंचल होती है लेकिन निरंतर अभ्यास से उसे वश में किया जा सकता है. फिर भी शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने मन को वश में किया हो. मेनका सामने आई तो विश्वामित्र का मन डोल गया. आत्मा की स्थिति मन से ऊपर है लेकिन चंद्रमा के समान चंचल मन उसकी नहीं सुनता. धर्मराज युधिष्ठिर का मन जुआ खेलने और पत्नी को दांव पर लगाने में जरा भी नहीं हिचका. एक बार जब अमिताभ अपनी फिल्में लगातार पिटने से हताश हो गए थे तो उनके पिता डा. हरिवंशराय बच्चन ने कहा था- मन का हो तो अच्छा और मन का न हो तो भी अच्छा ! कभी ऊपरवाले की मर्जी इतनी प्रबल होती है कि मन की इच्छा पूरी नहीं होती और मन मारकर रह जाना पड़ता है. मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे के मन में यह बात आई कि बीजेपी का समर्थन किया जाए. वह खुद चुनाव नहीं लड़ेंगे और अपनी पार्टी का कोई उम्मीदवार भी खड़ा नहीं करेंगे लेकिन फिर भी बीजेपी के लिए बीन बजाएंगे. क्या यूपी-बिहार के वे लोग बीजेपी और मनसे का साथ पसंद करेंगे जिन्हें परप्रांतीय कहकर राज ठाकरे ने पिटवाया था? आम तौर पर तालमेल करते समय पुरानी बातें भुला दी जाती हैं. मोदी के मन की बात का मनसे के साथ मिलाप हो गया!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

### CROSS WORD 11520 - डॉ. सागर खादीवाला

**बाएं से दाएं**

1. तुम्हारा (सं.), 3. सबसे बड़ा और श्रेष्ठ, 6. तनिक से आघा से टूट जाने वाला, चिड़चिड़ा, 9. वेष्टन, एक दैत्य का नाम, फिर, दोबारा (सं.), 10 लिखने की स्याही, 11. महादेव, 12. हाथ से सूत कातने का यंत्र, 13. कविता रचने वाला, 15. चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा, 16. बंदर, 18. महीना, मास, 19. अनेक प्रकार के, 21. कीड़ा-मकोड़ा, जमी हुई मैल, 22. नाखून, 23. वजन, बोझ.

**ऊपर से नीचे**

1. बांटना, बांटने की क्रिया, बंटवारा (उर्दू), 2. जंगल, कानन (सं.), 3. निषिद्ध,वर्जित, 4. जिसका नाश हो गया हो, 5. मोर (सं.), 7. ऋण, 8. अल्हा उदल का चचेरा भाई, 8. छापने वाला, 11. बोझा ढोने की क्रिया या भाव, 14. सांप, 15. जल में डूबने की क्रिया या भाव, गोता, 17. सूर्य, 20.

**Solution 11519**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डा | न | ब्रे | ड | मे | न | | चा |
| ल | य | | रा | | म | क | र |
| | ना | | ना | म | क | र | ण |
| सु | भि | क्ष | | द | सा | ना | |
| धा | रा | | सुं | द | र | | चि |
| सा | म | ना | | गा | | प | त्र |
| ग | | शि | का | र | गा | ह | |
| र | सा | त | ल | | ली | ल | ना |

## ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में अचानक यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में मन नहीं लगेगा, व्यापार व्यवसाय में व्यर्थ भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी, मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी, खर्च पर नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि होगी, मान सम्मान बढ़ेगा, पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा, यात्रा का योग है,कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों की शत्रुओं के षडयंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों का साहस बना रहेगा.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लगनशील स्वाभिमानी तथा सुन्दर कर्मठ, दूसरों के प्रति सहृदयता एवं उदारता से व्यवहार करेगा. स्पष्टवादी होगा. अपने कार्यों को सहर्ष स्वयं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. यात्रा और मनोरंजन का शौकीन होगा.

**मेष**- स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. मधुरता और साहसिक कार्यों में वृद्धि होगी. नियमितता बनी रहेगी.

**वृषभ**- व्यवसायिक मामलों में जोखिम से बचने का प्रयास करें. रक्त विकार या नेत्र पीड़ा हो सकती है. विवादित मामलों को न बढ़ायें. सुख रहेगा.

**मिथुन**- जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. अनचाही यात्रा से बचें. उठाईगीरों से सावधान रहें. आपके कार्यों में परिश्रम अधिक करना होगा.

**कर्क**- कुछ मानसिक तनाव रह सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से बचें. मन मुताबिक प्रस्ताव प्राप्त होने से मानसिक प्रसन्नता का योग प्रबल है.

**सिंह**- लंबी दूरी की यात्रा का योग है. किसी नवीन योजनाओं का विचार गंभीरता से होगा. व्ययभार अधिक होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

**कन्या**- आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. संयम से कार्य करना हितकर रहेगा. पारिवारिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. अतिथि आगमन का योग है.

**तुला**- पुराने आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. धैर्य से कार्य करें. मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. सामान्य प्रतिष्ठा वृद्धि होगी. शुभ सूचना मिलेगी.

**वृश्चिक**- रोजगार की तरफप्रयास करें, सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक में उत्साह बना रहेगा. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. उपहार मिलेगा.

**धनु**- रचनात्मक प्रयास सार्थक होगा. मांगलिक कार्यों पर अंतिम विचार होगा. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. पद प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

**मकर**- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कामकाज की अधिकता रहेगी. परिजनों का सहयोग रहेगा. निजी कामकाज बनने का योग प्रबल है.

**कुम्भ**- कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आपको संतोष रहेगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी. मान प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होगा.

**मीन**- मनोरंजन तथा धार्मिक स्थल की सैर होगी. किसी अभिन्न मित्र से भेंट होगी. यश मिलेगा. सामाजिक कार्यों में वृद्धि होने का योग प्रबल है.

### उदयकालीन ग्रह चाल

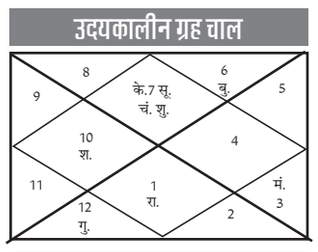


### पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2081 चैत्र शुक्ल एकादशी भृगुवासरे रात 8/46, मघा नक्षत्रे दिन 12/0, वृद्धि योगे रात 2/39, वणिज करणे सू.उ. 5/39 सू.अ. 6/21, चन्द्रचार सिंह, पर्व-कामदा एकादशी व्रत, शु.रा. 5, 7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

### व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल एकादशी को मघा नक्षत्र के प्रभाव से वनस्पति तेल, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. गेहूँ, सोना, चांदी, के भाव में सामान्य स्थिति रहेगी. सोना, चांदी लोहा के भाव में उतार चढाव आयेगा. भाग्यांक 1507 है.

### SUDOKU 6652

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 4 | | 6 | | | |
| | | | | | 2 | 7 | | |
| | 6 | 8 | | | | 9 | | |
| 5 | 3 | | | | | | | 6 |
| | | | | 6 | | | | |
| 7 | | | | | | | 9 | 2 |
| | | 9 | | | | 8 | 5 | |
| | | 2 | 1 | | | | | |
| | | | 3 | | 4 | | | |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6651

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 9 | 7 | 1 | 3 | 6 | 4 | 8 | 5 |
| 3 | 1 | 6 | 5 | 8 | 4 | 2 | 9 | 7 |
| 5 | 4 | 8 | 7 | 9 | 2 | 6 | 3 | 1 |
| 9 | 2 | 1 | 4 | 7 | 3 | 8 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 3 | 6 | 1 | 5 | 9 | 2 | 4 |
| 4 | 6 | 5 | 9 | 2 | 8 | 1 | 7 | 3 |
| 1 | 7 | 4 | 2 | 5 | 9 | 3 | 6 | 8 |
| 6 | 3 | 2 | 8 | 4 | 7 | 5 | 1 | 9 |
| 8 | 5 | 9 | 3 | 6 | 1 | 7 | 4 | 2 |